आखिर क्यों?

डॉ. चारुशीला सिंह

डॉ. चारुशीला सिंह

जन्म : 1 जनवरी 1981 देवरिया गंगा, सन्त कबीर नगर (उ.प्र.)

शिक्षा : एम.ए.,पी-एच.डी. (हिंदी साहित्य)

व्यवसाय : अध्यापन

माता : श्रीमती मालती सिंह

पिता : श्री नर्वदेश्वर सिंह

रुचि : लेखन, भक्ति-साहित्य पर चर्चाएँ, संतों एवं भक्तों के जीवनवृत्त में विशेष रुचि।

प्रकाशन : विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में कविता, गीत एवं संतचरितात्मक लेखों का प्रकाशन।

प्रकाशित रचना : भगवती प्रसाद सिंह : जीवन एवं साहित्य साधना (2021) हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयागराज के सौजन्य से।

पुरस्कार एवं सम्मान :

- गोरखपुर रत्न सम्मान 2023 (मा. मुख्यमंत्री जी के कर कमलों द्वारा)
- साहित्य विभूति सम्मान 2021
- फ्यूचर लीडर अवार्ड
- उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान
- शक्ति योद्धा सम्मान
- नारी सशक्तीकरण सम्मान
- श्री चित्रगुप्त सेवा वीर सम्मान
- महारानी मोहभक्त लक्ष्मी प्रतिभा सम्मान

विशिष्ट उपलब्धि : ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से राष्ट्रीय फलक पर पहचान।

आवास : एफ-904, जेमिनी पैराडाइज, निकट मेडिकल कॉलेज, गोरखपुर-273001 (उ.प्र.)

मो. : 80051-20152 **ई-मेल :** charushahi111@gmail.com

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726

ISBN 978-93-93091-56-7
9 789393 091567
₹ 320.00

आखिर क्यों?

आखिर क्यों?

डॉ. चारुशीला सिंह

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-93-93091-56-7

4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,

अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

मो.: 9968288050, 9911866239

ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

संस्करण : 2023

© डॉ. चारुशीला सिंह

आवरण : बंशीलाल परमार

मुद्रक : क्लासिक प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखिका/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

—समर्पण—

पूज्या माँ श्रीमती मालती सिंह
व
पूज्य पिताजी श्री नर्वदेश्वर सिंह
की
वात्सल्य एवम् आशीष की उस मधुर छाया
को जिससे मेरे अस्तित्व की निर्मिति हुई है

गहन जीवन बोध की कवितायें

'आखिर क्यों' डॉ. चारुशीला सिंह का प्रथम कविता संग्रह है लेकिन भाषा और अनुभव की दृष्टि से इतना परिपक्व, कि उन्हें उनके समकालीन उल्लेखनीय कवियों की पंक्ति में बैठा दे। डॉ. चारुशीला सिंह की कविता में उनके समय की तस्वीर साफ साफ देखी जा सकती है और स्पष्ट सुनी जा सकती है, उसकी आवाज। डॉ. चारुशीला सिंह की भाषा में लोक जीवन की शब्दावली प्रचुर है, मगर वे देशज शब्दों को ही नहीं लोक को महत्व देने वाली कवयित्री हैं। वे प्रेम व सम्बन्धों को बड़ी गहराई से महसूस करने व उन्हें जीने वाली कवयित्री है। प्रकृति के बिम्ब तथा रिश्तों के चित्र डॉ. चारुशीला सिंह की कविता में अपने अलग अर्थ-सन्दर्भ के साथ उपस्थित होते हैं उनमें गहन परम्पराबोध है। आज के समकालीन संकटों, समाज की असंगतियों विसंगतियों को लेकर उनमें खास तरह की बेचैनी सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। डॉ. चारुशीला अपनी कविताओं में रिश्तों, सम्बन्ध ों, सामाजिक व्यवस्थाओं के बीच समरसता का पुल बनाती हैं विशेषतः समाज में स्त्री-पुरुष की पारम्परिक पारिस्थितिकी का वे भाष्य करती हैं। आज के विमर्शवादी युग में जहाँ स्त्री व पुरुष की एक स्वतन्त्र सत्ता का निरन्तर बखान दर्ज किया जा रहा है, प्रतिक्रियावादी आवेश चरम पर है ऐसे समय में डॉ. चारुशीला सिंह स्त्री-पुरुष को एक दूसरे का पूरक समझने का प्रस्ताव करती हैं। उनका यह प्रस्ताव जीवन को समरस बनाते हुये एक नवीन दृष्टि भी प्रदान करता है। वे यह इस लिये कर पाती हैं कि उनका जीवनबोध गहन एवं व्यापक है उनके यहाँ गहन परम्पराबोध है। ब्रिटिश कवि एवं विचारक टी. एस. इलियेट ने अपने विश्व प्रसिद्ध निबन्ध 'ट्रेडिशन एण्ड इण्डीविजुअल टैलेंट' में कहा है कि कवि के लिये व्यक्तिगत प्रज्ञा की अपेक्षा उसके परम्पराबोध का विशेष महत्व होता है। डा. चारुशीला सिंह के संवेदना का परिसर बड़ा है, उसमें मनुष्य ही नहीं

मनुष्येतर प्राणियों पेड़, पहाड़, रीति, नीति, प्रेम, सम्बन्ध, रिश्तों, मौसम, सपनों के प्रति गहरा लगाव है। डॉ. चारुशीला सिंह की कवितायें किसी तरह की यानी चालू मुहावरों की नई आलंकारिता, सबको तुच्छ नगण्य मानने की अतार्किक बहादुरी, बड़बोलेपन और मध्यवर्गीय आत्म दया से मुक्त हैं। ये रचनायें इतनी शान्त, सादी और कविता के लटकों से अलग हैं कि नया आस्वाद देती हैं। इन कविताओं में बराबर एक तरह की शान्त पर अनिवार्य ऐन्द्रिकता है जिससे चीजों को देखने-पकड़ने में उनके यहाँ एक तरह की आदिम शक्ति का अहसास होता है। डॉ. चारुशीला सिंह की कविताओं में आत्मस्फीति की बजाय लगातार अपस्फीति है, इनमें एक सूक्ष्म नैतिक बोध है जो अतिरंजना का बराबर निषेध कर वस्तुपरकता की ओर ले जाता है। और भाषा, उसकी छवियों-अन्तर्ध्वनियों को कल्पनाशील ढंग से समायोजित करने का सुकृत्य प्रयत्न है।

डॉ. चारुशीला सिंह के यहाँ रिश्तों की गहरी संवेदनात्मक अनुभूति है, वे रिश्तों की कद्र करने वाली कवयित्री हैं। माँ, पिता, दीदी के गझिन रिश्तों के रेशों से बनी हुई जिन्दगी की उनकी कविताओं में प्रचुर उपस्थिति है—

माँ— बचपन में मेरी नीरस बातों को भी
ऐसी सुनती, जैसे वे कितनी
सरस हों, सार युक्त हों

× × ×

बोलो माँ
सब कहते हैं मुझमें तुम्हारी ही आभा है
अब मुझे भी लगता है
माँ बेटी का ये दुःख भी साझा है

मै मिटाऊँगी.....मैं मिटाऊँगी
झूठी मर्यादाओं की यह अमा-निशा

बहनें— बिछड़ना नियति है
पर निभाती हैं

दूर जाकर भी
दूर नहीं जातीं
हर पल रहती हैं साथ खड़ी
लेकर जादू की छड़ी
इनके वाद-विवाद और संवाद
अजी क्या कहने
नहीं समझे
ये हैं बहनें

पुरुष सत्ता से आत्मीय संवाद करती यह कविता–

जता लेते हो क्रोध
बता कर व्यक्त भी कर लेते हो
पर........ पर.........
प्रेम प्रकट नहीं कर पाते
डरते हो
समाज इस व्यवहार से
तुम्हें स्त्रैण न समझ ले

आज स्त्री विमर्श का सबसे बड़ा तर्क यही है कि पुरुष, स्त्री की संवेदना को सहनुभूति से समझता व व्याख्यायित करता है जो मौलिक व वास्तविक कदापि नहीं हो सकता। स्त्री यदि स्त्री के विषय में कुछ अभिव्यक्ति देती है तो वह उसकी स्वानुभूति होती है और यही मौलिक एवं वास्तविक होती है। डॉ. चारुशीला सिंह इस कविता में पुरुष-मन से आत्मीय संवाद कर धारा के विपरीत चलने का जोखिम उठाती हैं अतः उनके इस अदम्य साहस की प्रशंसा की जानी चाहिए।

स्त्री देह का भाष्य करती यह महत्वपूर्ण कविता–

स्त्री देह
कितनी धारदार
कितना मजबूत आधार

कभी टुकड़े-टुकड़ कर देती है
तो कभी-कभी समेट कर जोड़ देती है, सैकड़ों टुकड़े
ढो लेती है हर भार
सह लेती है हर वार
हर बार यही तो बनती है
शोषण का आधार—(स्त्री देह)

यह कविता स्त्री देह का विभिन्न कोणों से भाष्य करती है। डॉ. चारुशीला स्त्री देह के प्रतीक से समूचे स्त्री जीवन से संवाद करती हैं। माँ, बहन, बेटी सहित तमाम अन्य रिश्तों का भार ढोती स्त्री समूची गृहस्थी, समूचे सामाजिक ढाँचे को सम्भालती है। वह चुप-चाप हर भार सहन कर लेती है डॉ. चारुशीला मानती हैं कि यही सर्व स्वीकारोक्ति ही उसके शोषण का आधार बनती है। वे प्रकारान्तर से प्रस्ताव करती- हैं कि स्त्री को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिये खुलकर प्रतिवाद करना चाहिये और जो स्वीकार करने-योग्य न हो उसे कदापि स्वीकार नहीं करना चाहिये। डॉ. चारुशीला की यह काव्य प्रवृत्ति ध्यातव्य है कि उनकी कविता में प्रतिरोध बड़ी शान्त ऐन्द्रिकता के स्वर में आता है।

'वह लौटा है' एक प्राकृतिक-छटा का खूबसूरत काव्यांकन—

दिन लेकर लौटा है
सुरमई शाम लेकर लौटा है
बढ़ाकर चाँद की रोशनाई
पूरा आकाश लेकर लौटा है
कई जज्बात लेकर लौटा है
अनकही हर बात लेकर लौटा है

कवि मूलतः प्रकृति का सहचर होता है। डॉ. चारुशीला प्रकृति से अत्यन्त गहरा रागात्मक रिश्ता रखने वाली कवयित्री हैं यही इनके खांटी कवि मन की प्रतिभूति है, ऋतुओं, मौसम, प्रकृति के बदलते परिवेश का उन्होंने अपनी कविताओं में खूबसूरत चित्रांकन किया है।

ग्राम-चेतना की एक कविता का अंश 'कुँआ'

गाँव की याद आते ही
याद आता है वो कुआँ
जहाँ गर्मी की छुट्टियों का
सबसे अच्छा समय
व्यतीत हुआ था

डॉ. चारुशीला कस्बाई या नगरीय चेतना की कवयित्री नहीं है वे मूलतः ग्राम-चेतना की कवयित्री हैं। गाँव उनमें कहीं भीतर तक रचा बसा है। उनके अधिकतर प्रतीक एवं बिम्ब विधान गाँव से आते हैं इसी लिये वे सुपरिचित लगते हैं और उनसे एक सहज रागात्मक रिश्ता कायम हो जाता है ।

डॉ. चारुशीला की कविताओं में 'मिनिमैलिटी' के बावजूद, बहुत बारीक निरीक्षण का हमेशा साक्ष्य रहता है और कभी-कभी ऐसी अबोध सरलता भी, जो इस दहशत भरी दुनिया में राहत का काम करती है। उनकी कवितायें जहाँ चीजों के बीच नये सम्बन्ध खोजती हैं वहीं चीजों को स्वतन्त्र सत्ता में देखती भी हैं। अपने समय से जूझने से ही डॉ. चारुशीला की कविताओं में प्रामाणिक सघनता आ पाई है, उसमें कहीं भी ऊपर या बाहर से दृष्टिपात करने की मुद्रा नहीं है। यह बखान बीचोंबीच फँसे-बसे आदमी का है, जिसकी हिस्सेदारी के बारे में शक की कोई गुंजाइश नहीं है। उनकी संवेदना निरे वस्तु संसार में और मानवीय सम्बन्धों में ऐसा कुछ खोजती है जो गहरी अन्तर्दृष्टि देता है और ऐसे अप्रत्याशित, विचलित करने वाले अनुभवों के बीच हमें ले जाता है। कविता 'प्रेम' की कुछ पंक्तियाँ—

प्रेम स्वतन्त्रता है
और है
स्वतन्त्रता का आदान प्रदान
प्रेम जागरण है
प्रेम-सौन्दर्य है

होश में मदहोशी
और

मदहोशी में होश है प्रेम,
प्रेम भक्ति है, मुक्ति है
शान्ति है

प्रेम जीवन का मूल तत्व है। जो प्रेम नहीं कर सकता वह न घृणा कर सकता है और न ही क्रान्ति कर सकता है। कविता जीवन के उसी मूल तत्व का कई कोणों से भाष्य करती है।

शीर्षक कविता 'आखिर क्यों' की कुछ पंक्तियाँ—

स्त्री का अपना अलग संवर्ग है
अलग है उसकी कोटि

× × ×

स्त्री का स्वरूप
परिभाषित होता है
पुरुषों के अनुरूप
आखिर क्यों ?

स्त्री पुरुष के संबंध व स्त्री के पारम्परिक परिभाषित स्वरूप को लेकर यह कविता एक बड़ा सवाल खड़ा करती है। पूरे कविता संग्रह में प्रश्नाकुलता है जो विभिन्न मुद्दों पर साफ-साफ दिखाई पड़ती है। डॉ. चारुशीला की यही प्रश्नाकुलता की बेचैनी ही उनसे कविता चरितार्थ करवाती है।

डॉ. चारुशीला सिंह की पूरी बिम्ब व्यवस्था, जीवन की छवियाँ, मुद्रायें और मुहावरे सब इस सीमित दुनिया से आते हैं अतः सुपरिचित लगते हैं। यह समय जटिलता से बचने का है, बौद्धिक सख्ती से बचकर कुछ लोकप्रिय सामान्यीकरणों से अपने समय को समझने का है। डॉ. चारुशीला की कवितायें इस मानदण्ड पर खरी उतरती हैं। इन कविताओं को पढ़ने से हमारी देखने की शक्ति बढ़ती है इन अर्थों में ये दृष्टिवर्ती रचनायें हैं। डॉ. चारुशीला के यहाँ चीजें दिखती हैं, बोलती हैं चुप रहती हैं, घेरती हैं। सर्वथा निजी को भी किसी भाव-स्फीति या वाग्स्फीति के सहारे कविता में हस्तक्षेप करने की इजाजत डॉ. चारुशीला नहीं देतीं। उनकी

कविता में उनका व्यक्तित्व सीधे सीधे अपने को एसर्ट नहीं करता लेकिन आत्मविलोपन द्वारा भी वे अपने व्यक्तित्व की अचूक छाप छोड़ती हैं। अपने स्वाभाविक संकोच के कारण जिसकी काव्याभिव्यक्ति अक्सर शब्दों की मितव्ययता द्वारा होती है।

आशा है 'आखिर क्यों' कविता संग्रह पाठकों में पर्याप्त समादर प्राप्त करेगा व हमारे समय में कविता की संभावनाओं को आगे बढ़ायेगा।

शुभकामनाओं सहित!

श्रीधर मिश्र
गोरखपुर
94508-29617

अपनी बात

जहाँ तक कविताओं से जुड़ाव का प्रश्न है, सृजनशीलता का प्रश्न है, ठीक-ठीक कह नहीं सकती कि कब से है पर मेरी स्मृति में जहाँ से है... मैं बहुत छोटी उम्र से ही माँ के विस्मृत होते गीतों को अपनी पंक्ति जोड़कर पूरा करती थी। उस समय न मुझे पता था न घरवालों को कि नियति भविष्य की नींव रख रही है। सृजनशीलता इस तरह कभी पुस्तकाकार रूप लेगी सोचा भी नहीं था। दूर-दूर तक ननिहाल और ददिहाल में कोई भी इस अभिरुचि का नहीं था। हाँ पिताजी उच्च शिक्षा में रहे इसलिए घर का वातावरण पठन-पाठन के सर्वथा अनुकूल अवश्य था।

शुरुआत इसी तरह के जोड़-तोड़ से हुई फिर सृजनात्मकता ने शुभकामना संदेशों में प्रवेश किया पर डायरी के पन्नों तक नहीं पहुँची। पढ़ाई में अति गंभीर होने के बावजूद लेखन व सृजन में गंभीरता कॉलेज के दिनों में संपादकीय दायित्व निर्वहन के साथ आयी। लड़कियों के कॉलेज में अध्यापन एवं काव्य मंचों से जुड़ाव ने मेरी रचनाओं को धार और गति दी। शिक्षण हो या सृजन परिवेश की ऊर्जा ने मुझे सदैव बल दिया फलस्वरूप ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर मुझे हिन्दी शिक्षण हेतु न सिर्फ अलग से जाना पहचाना जाने लगा अपितु देश के प्रतिष्ठित समाचार पत्र, दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण में 'स्पार्क' पृष्ठ पर जगह भी मिली। कविताओं की बात करूँ तो देश के प्रतिष्ठित काव्य मंचों, दैनिक जागरण समूह द्वारा आयोजित कवि सम्मेलनों के साथ ही साथ टीवी के बहुचर्चित काव्य शो 'वाह भाई वाह' तक अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी हूँ। यह सब निःसंदेह परिवेश की ऊर्जा का ही प्रतिफलन है। गुरुजनों का निरंतर बढ़ता दबाव और प्रोत्साहन ही प्रकाशन की प्रेरणा बनी।

अपनी कविताओं के बारे में इतना ही कह सकती हूँ कि इनमें बड़े सपने उगाने का हौसला है, स्थायित्व की जगह गतिशीलता है, कल्पनाओं के सबरंग हैं तो मनुष्य की गिरावट भी दर्ज है, समय के आख्यान हैं तो

समस्यापूर्ति भी है, जीवन का यथार्थ है इनमें, न सिर्फ जिया गया पल है अपितु आज, कल और आने वाला कल भी है। असीम संवेदना के साथ सर्जना है परिवेश की, सिर्फ समस्याएँ और सामंजस्य ही नहीं अपितु अजस्र प्रवाही प्रेम भी है इनमें। दुनिया को जितना और जिस रूप में खुली आँखों ने देखा उसी का सहज प्रस्फुटन है यह संकलन।

यह मेरी दूसरी पुस्तक और प्रथम काव्य संग्रह है। पहली पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयागराज से 2021 में प्रकाशित हुई जो कि एक शोध प्रबंध है। इस संग्रह के प्रकाशन हेतु जिन आदरणीय गुरुजनों ने मुझे बारम्बार प्रेरित किया उनमें डॉ. उदय प्रताप सिंह जी, डॉ. वेदप्रकाश पाण्डेय जी, डॉ. रामदरश राय जी एवं प्रो. कृष्णचन्द्र लाल जी प्रमुख हैं। आप सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

अपने पारिवारिक सदस्यों में मैं सभी को धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने किसी न किसी रूप में मुझे प्रेरणा प्रदान की। विशेष रूप से भ्राता-द्वय शिवेश प्रताप सिंह एवं ईशान प्रताप सिंह के साथ ही साथ छोटे बहनोई प्रियंत कुमार सिंह जी, पुत्री संचिता शाही एवं पुत्र देवर्षि शाही के समय-समय पर किये गए आत्मिक अनुरोध के लिए मैं उन्हें अन्तःमन से आशीर्वाद देती हूँ। साथ ही अपने जीवन साथी श्री रीतेश शाही को साधुवाद देती हूँ जिन्होंने विभागीय एवं गृहस्थ जीवन की बहुविध कठिनाइयों के रहते हुए भी मेरे सृजन को कभी बाधित नहीं होने दिया।

मेरी कविताओं को किताबी आकार देने वाले सुप्रसिद्ध कवि एवं आलोचक श्रीधर मिश्र जी के सुयत्न हेतु आभार शब्द बहुत छोटा होगा फिर भी उनके सक्रिय सहयोग हेतु अन्तःकरण से आभार व्यक्त करती हूँ।

संग्रह की प्रकाशक श्रीमती कुसुमलता सिंह जी के प्रति भी मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने संग्रह को सुरुचिपूर्ण कलेवर देकर इसे यथाशीघ्र पाठकों तक पहुँचाने में हमारा सहयोग किया।

अब सुधी पाठक ही ढूंढेंगे मेरे प्रश्नों के हल, वही बाँचेंगे मेरे प्रेमपत्र और वही संरक्षित करेंगे मेरा कल, आज और कल। उनका स्नेह ही सृजन को सार्थकता प्रदान करेगा।

डॉ. चारुशीला सिंह

विषय सूची

- गहन जीवन बोध की कवितायें vii
- अपनी बात xv

1. सामंजस्य 21
2. ये आईने 22
3. हिन्दी तू कहाँ नहीं 23
4. तुम पहले क्यों नहीं मिले 24
5. कैसे बताऊँ 26
6. नये दौर का दंश 27
7. ईद मुबारक 28
8. प्रेयसी-1 29
9. प्रेयसी-2 30
10. तुम हो 31
11. मोह 32
12. माँ 34
13. बहनें - I 36
14. बहनें - II 38
15. दीदी 39
16. स्टेट्स 40
17. संवाद 41

18. ये बारिश 42
19. विश्वास 43
20. सपने 44
21. स्त्रियाँ 45
22. ख़ास 46
23. स्त्री स्वप्न 47
24. ओ पुरुष! 48
25. निबाह 49
26. स्त्री देह 51
27. मोहन 52
28. प्रतीक्षाएँ 53
29. प्रकृति 54
30. पीड़ा 55
31. चुनौतियाँ 56
32. वह लौटा है 57
33. शब्द 58
34. बाँध मन पर होते हैं 59
35. हिन्दू नव वर्ष 60
36. रंगीन सपने 61
37. राहत 62
38. चाहत 63
39. चाय 64
40. लोक 65
41. दो घड़ी 67
42. कुआँ 69
43. बहुरंग 71
44. मन 73
45. प्रेम 75

46. वसंत 77
47. गीत संगीत 79
48. वह समय कब आयेगा 81
49. स्मृतियाँ विदा नहीं हुईं 82
50. सृजन 84
51. वास्तविक सौंदर्य 86
52. सब कुछ पीछे नहीं छूटता 87
53. सविनय अवज्ञा 90
54. पाश्चात्यीकरण 91
55. पहाड़ 93
56. तुम्हारी आँखें 96
57. मेरे प्रेमपत्र 98
58. प्रकृति 101
59. रतिरीति 103
60. गुरु मेरे 104
61. प्रेम का विज्ञान 106
62. जटिल निर्मिति 108
63. कविता 109
64. नेट 111
65. संबोधन (आप और तुम) 112
66. घर 114
67. आखिर क्यों? 116
68. जिस दिन तुम शहर में नहीं थे 117
69. चिन्ता 119
70. पसंद 120